The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

राहुल
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
बद्री विशाल डिग्री कॉलेज फर्रुखाबाद।

सरांश:

भारतीय महिला जहां त्याग, करुणा व ममता की मूर्ति है वही वीरता, साहस और बलिदान देने में वह पुरुषों से कभी भी पीछे नहीं रही। प्राचीन, मध्यकाल और आधुनिक भारत का इतिहास ऐसी अनेक वीरांगनाओं के उदाहरण से भरा हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना है।

विषय संकेत : *स्वदेशी आंदोलन, होमरुल लीग, क्रांतिकारी आंदोलन, गांधीवादी जन आंदोलन, महिला अधिकार।*

शोध अध्ययन

महिलाओं की सामाजिक दशा तथा सुधार आंदोलन

1. 19 वीं शताब्दी में भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था। सामाजिक कुरीतियों का धर्म के नाम पर समर्थन किया जाता था। पराधीनता के इस काल में न केवल महिला शिक्षा का अभाव था बल्कि सती प्रथा, बाल विवाह, बहु विवाह, विधवाओं का विवाह न होना, पर्दा प्रथा , कन्या बालहत्या आदि कुप्रथाओं के कारण महिलाओं का जीवन नरक तुल्य बन कर रह गया था। सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन जैसे राजा राममोहन राय और ब्रह्म समाज, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद और आर्य समाज, वीरेशालिंगम, प्रोफेसर डी के कर्वे,

ज्योतिबा एवं सावित्रीबाई फुले आदि ने महिलाओं की दशा सुधारने के विभिन्न प्रयास किये। जे.ई.डी. बेथ्युन ने महिला शिक्षा की सशक्त पहल की। 1854 के वुड डिस्पैच के द्वारा महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया गया। राजा राममोहन राय के प्रयासों से विलियम बेंटिक ने 1829 के रेगुलेशन 17 के द्वारा सती प्रथा को अपराध घोषित कर दिया। 1856 में हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम बना। बाल विवाह को रोकने के लिए 1872 में नेटिव मैरिज एक्ट बना जिसके द्वारा 14 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर रोक लगाई गई। 1891 में एज ऑफ कंसेंट एक्ट बना तथा 1930 में शारदा अधिनियम द्वारा 14 वर्ष से कम उम्र की लड़की के विवाह को अवैध घोषित किया गया। उपरोक्त प्रयासों द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के प्रयत्न किए गए।

2. **1857 के विद्रोह में महिलाओं की भूमिका** 1857 में कंपनी शासन के विरुद्ध भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ हुआ। इस स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली महिलाओं में महारानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल , झलकारी बाई, ऊदा देवी , भीमाबाई होलकर आदि प्रमुख थी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से लड़ती हुई जून 1858 को शहीद हुई। जनरल ह्यूरोज ने उनके बारे में कहा था कि "यहां वह औरत सोई हुई है, जो विद्रोहियों में एकमात्र मर्द थी।" लखनऊ में बेगम हजरत महल ने विद्रोहियों का नेतृत्व संभाला था। विद्रोह के दमन के बाद वह नेपाल चली गई। झलकारी बाई रानी लक्ष्मीबाई की सेना की प्रमुख वीरांगना थी। इसी प्रकार उदा देवी ने लखनऊ में अंग्रेजी सेना के विरुद्ध संघर्ष किया। इसके अतिरिक्त अनेक गुमनाम महिलाएं इस संघर्ष में शहीद हुयी और विद्रोह के दमन के फलस्वरुप अनेक अत्याचारों को सहन किया।

3. **स्वदेशी आंदोलन तथा क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका**

1905 में बंगाल विभाजन के विरुद्ध स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन प्रारंभ हुआ। महिलाओं ने भी इस आंदोलन में पुरुषों का साथ दिया। महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकली। पुरुषों के साथ जुलूसों, सभाओं ,प्रदर्शनों में भाग लिया। विदेशी चूड़ियां पहनने और विदेशी बर्तन का इस्तेमाल करना बंद कर दिया।

क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। गोली चलाने में, ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या करने में भी वह पीछे नहीं हटी। महिला क्रांतिकारियों में मैडम भीकाजी रुस्तम कामा, दुर्गा भाभी, प्रीतिलता वाडेदार, कल्पना दत्त, शांति घोष और सुनीति चौधरी, बीना दास प्रमुख थी। दुर्गा भाभी का विवाह भगवती चरण वोहरा से हुआ था। वह हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्यों के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित थी। मैडम भीकाजी रुस्तम कामा ने 1907 में जर्मनी के स्टुटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में भाग लिया और भारतीय ध्वज फहराया। उन्होंने विदेशों में भारतीय स्वतंत्रता के लिए

काम किया। उन्होंने लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा जैसे क्रांतिकारियों के साथ काम किया। प्रीतिलता वाडेदार आचार्य सूर्य सेन की इंडियन रिपब्लिकन आर्मी से जुड़ी थी। कल्पना दत्त को आचार्य सूर्य सेन के साथ गिरफ्तार कर लिया गया तथा इन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई। शांति घोष तथा सुनीति चौधरी ने मजिस्ट्रेट स्टीवंस की हत्या कर दी उन्हें आजीवन कारावास की सजा दी गई और बीना दास 6 फरवरी 1932 में कोलकाता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के दौरान ने बंगाल के गवर्नर स्टेनली जैक्सन पर गोली चलाई। उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है की महिला क्रांतिकारियों ने निर्भीकता के साथ ब्रिटिश शासन के अत्याचारों का मुकाबला किया।

4. **एनी बेसेंट और होम रूल आंदोलन** एनी बेसेंट थियोसॉफिकल सोसायटी की अध्यक्ष रही थी उन्होंने आयरलैंड के होम रूल लीग की तरह भारत में स्वशासन की मांग को लेकर आंदोलन चलाने की योजना बनाई। उन्होंने न्यू इंडिया तथा कामन वील अखबारों के माध्यम से आंदोलन छेड़ दिया। एनी बेसेंट तथा तिलक के प्रयासों से गरम पंथियों को वापस कांग्रेस में ले लिया गया। सितंबर 1916 में एनी बेसेंट की लीग ने काम करना शुरू कर दिया। होमरूल आंदोलन के बढ़ते प्रभाव को देखकर जून 1917 में एनी बेसेंट को गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में मांटेग्यू की घोषणा की बाद सितंबर 1917 में एनी बेसेंट को रिहा कर दिया गया। उनकी लोकप्रियता के कारण उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया गया। होमरूल आंदोलन ने गांधीवादी आंदोलनों के लिए एक आधार का निर्माण किया।

5. **गांधीवादी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका**

गांधी जी द्वारा प्रारंभ किए गए आंदोलनों में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, और भारत छोड़ो आंदोलन सभी में महिलाओं ने प्रभावपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया और पर्दा प्रथा को छोड़कर बाहर निकली। बहिष्कार , स्वदेशी, शराब की दुकान पर धरने , जुलूस आदि में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। तिलक फंड में महिलाओं ने अपने आभूषण दान दिए। चितरंजन दास की पत्नी बासन्ती देवी ने असहयोग आंदोलन व सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लिया तथा गिरफ्तारी दी। सरोजिनी नायडू, सुचेता कृपलानी, अरूणा आसफ अली, उषा मेहता, मातंगिनी हाजरा, कनकलाता बरूआ , लतिका घोस आदि के अतिरिक्त भी अनगिनत महिलाओं ने भारत की आजादी को प्राप्त करने के लिए निर्भीकता के साथ प्रयास किए।

भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजनी नायडू ने धारासणा नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया। वह 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष रही। सविनय अवज्ञा आंदोलन भारत छोड़ो आंदोलन में उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और गांधीवादी सुचेता कृपलानी ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। अरूणा आसफ अली ने सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मुंबई के ग्वालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्वज फहराया। भूमिगत होकर इन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण कार्य किया। उषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गुप्त कांग्रेस रेडियो संचालित किया। मातंगिनी हाजरा ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, तथा भारत छोड़ो आंदोलन सक्रिय रूप से भाग। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान स्वतंत्रता का ध्वज लेकर उन्होंने एक महिला जुलूस का नेतृत्व किया और पुलिस द्वारा गोली चलाई जाने से उनकी मृत्यु हो गई। कनकलता बरुआ असम की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थी जो मात्र 17 वर्ष की आयु में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पुलिस की गोली से शहीद हो गई। सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज में रानी झांसी रेजीमेंट का नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल द्वारा किया गया।

महिलाओं से जुड़े संगठन एक और जहां महिलाएं भारत की आजादी के संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी वहीं दूसरी ओर अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत थी। ताराबाई शिंदे ने ' ए कंपैरिजन बिटवीन वूमेन एंड मेन ' पुस्तक में अधिकारों के प्रति आवाज उठाई। रमाबाई ने मुंबई में एक विधवा सदन स्थापित किया कुछ समय बाद यह पूना स्थानांतरित हो गया। सरोजिनी नायडू ने स्त्रियों की मताधिकार की मांग के लिए लंदन में भारत सचिव से मुलाकात की। आयरिश महिला मार्गरेट कजिंस तथा एनी बेसेंट के प्रयास से 1917 में विमेंस इंडियन एसोसिएशन की स्थापना हुई। 1925 में नेशनल काउंसिल ऑफ विमेंन इंडिया का गठन हुआ। 1927 में ऑल इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस बनी। इसी प्रकार महिला संगठनों में सरला देवी चौधरानी का भारत स्त्री महामंडल ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पूरे देश में शाखाएं खोली।

निष्कर्ष उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है चाहे वह क्रांतिकारी आंदोलन हो या गांधी जी के अहिंसक आंदोलन। इसके अतिरिक्त महिलाएं राजनीतिक व सामाजिक अधिकारों के प्रति भी सचेत थी।

संदर्भ ग्रंथ

1. चंद्र , बिपिन , 'भारत का स्वतंत्रता संघर्ष ' , हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. बंधोपाध्याय, शेखर, ' प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद ' , ओरियंट ब्लैकस्वान ।
3. ग्रोवर, बी .एल और मेहता, अलका 'आधुनिक भारत का इतिहास ' , एस.चन्द।
4. महाजन, विद्याधर, ' आधुनिक भारत का इतिहास ' , एस चंद एंड कंपनी।
5. शर्मा ,एल .पी. , ' आधुनिक भारत ' , लक्ष्मीनारायण अग्रवाल।
6. https:// amritmahotsav.nic.in

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/38
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

राहुल

for publication of research paper title

स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY